DSSSB TGT & PGT

Part-B

SCHOLAR BATCH

संस्कृत

कारक प्रकरण

Part -3

LIVE 08-05-2024 05:00 PM

सूत्र "अकथितं च ।"

अपादान आदि कारकों की जहाँ अविवक्षा है, उनकी कर्म संज्ञा होती है और कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है। संस्कृत भाषा में ऐसी 16 धातुएँ हैं, जिनके प्रयोग में एक तो मुख्य कर्म होता है तथा दूसरा गौण कर्म होता है। इस गौण कर्म में ही द्वितीया विभक्ति होती है। इन धातुओं को द्विकर्मक धातुएँ कहते हैं, जो निम्नलिखित हैं –

DSSSB TGT & PGT संस्कृत SCHOLAR BATCH

1. दुह (दुहना)	गोपालः गां दुग्धं दोग्धि । (गोपाल गाय से दूध दुहता है ।)
2. याच् (माँगना)	सुरेशः महेशं पुस्तकं याचते । (सुरेश महेश से पुस्तक माँगता है ।)
3. पच् (पकाना)	पाचकः तण्डुलान् ओदनं पचति । (पाचक चावलों से भात पकाता है।)
4. दण्ड् (दण्ड देना)	राजा गर्गान् शतं दण्डयति । (राजा गर्गों को सौ रुपये का दण्ड देता है)
5. प्रच्छ् (पूछना)	सः माणवकं पन्थानं पृच्छति। (वह बालक से मार्ग पूछता है।)

6. रुध् (रोकना)	ग्वालः गां व्रजम् अवरुणद्धि । (ग्वाला गाय को व्रज में रोकता है।)
7. चि (चुनना)	मालाकारः लतां पुष्पं चिनोति । (माली लता से पुष्प चुनता है।)
8. जि (जीतना)	नृपः शत्रुं राज्यं जयति। (राजा शत्रु से राज्य को जीतता है ।)
9. ब्रु (बोलना) शास् (कहना)	गुरुः शिष्यं धर्मं ब्रूते / शास्ति । (गुरु शिष्य से धर्म कहता है ।)
10. मथ् (मथना)	सः क्षीरनिधि सुधां मथ्नाति । (वह क्षीरसागर से अमृत मथता है)

11. मुष् (चुराना)	चौरः देवदत्तं धनं मुष्णाति । (चोर देवदत्त से धन चुराता है।)
12. नी (ले जाना)	सः अजां ग्रामं नयति । (वह बकरी को गाँव ले जाता है।)
13. हृ (हरण करना)	सः कृपणं धनं हरति । (वह कंजूस के धन को हरता है।)
14. हृ (हरना)	रामलाल : अजां ग्रामम् हरति । (रामलाल बकरी को गांव में हरता है ।)
15. कृष् (खींचना)	रामलालः अजां ग्रामम् कर्षति । (रामलाल बकरी को गांव में खींचता है।)

16. वह (वहन करना / ढोहना)	रामलालः अजां ग्रामम् वहति । (रामलाल बकरी को गांव में वहन करता है / ढोहता है।)

1. दुह् (दुहना/ दोहना)

गोपालः गां पयः (दुग्धं) दोग्धि ।

(गोपाल गाय से दूध दुहता हैं)

यहां वक्ता 'गो' को अपादानरूप में कहना नहीं चाहता अपितु उपयुज्यमान 'पयः' के प्रति निमित्त मानता है। इस प्रकार अपादानरूप की अविवक्षा होने पर 'गो' की कर्मसंज्ञा हो जाती है।

इस प्रकार दुह् धातु के दो कर्म हो जाने से वह द्वि कर्मक हो जाती है। इन दो कर्मों में 'पयः' ईप्सिततम होने से "कर्तुरीप्सिततमं कर्म" से प्रधानकर्म और दूसरा 'गो' अप्रधान या गौण कर्म माना जाता है। दोनों कर्म अनुक्त हैं अतः दोनों में द्वितीया विभक्ति हो जाती है।

सूत्रः " तथायुक्तं चानीप्सितम् "

वृत्तिः येन प्रकारेण कर्तुरीप्सिततमं क्रियया युज्यते, तेन एव चेत् प्रकारेण यदनीप्सितं युक्तं भवति, तस्य कर्मसंज्ञा विधीयते ।

सूत्रार्थः जिस प्रकार ईप्सिततम कर्म की कर्मसंज्ञा की जाती है, उसी प्रकार अनचाहे कर्म की भी कर्म संज्ञा होती है। अनीप्सित से तात्पर्य "अनचाहा कारक" हैं।

जैसेः

- सः ग्रामं गच्छन् तृणं स्पृशति ।

(वह गांव जाते हुए, तिनके को छूता है ।)

यहाँ उसके द्वारा गांव को जाता ईप्सिततम कर्म है तथा तिनके को छूना अनीप्सित कर्म है। अतः यहाँ ईप्सिततम तथा अनीप्सित दोनों में कर्मसंज्ञा करके द्वितीया विभक्ति होती है।

- चेतनः ओदनं भुञ्जानो विषं भुङ्क्ते ।

(चेतन भात खाते हुए, विष को खाता है ।)

- माता आपणं गच्छन्ती शिशुं पश्यति ।

(माता बाजार जाते हुए, शिशु को देखती है ।)

सूत्रः " अधिशीङ्स्थाऽऽसां कर्म "

वृत्तिः अधिपूर्वाणां शीङ् स्था आसित्येतेषामाधारो कर्म स्यात् ।

सूत्रार्थः अधि उपसर्ग पूर्व शी (शीङ् – सोना) धातु, स्था (तिष्ठ ठहरना) धातु और आस् (बैठना) धातु के आधार की कर्म संज्ञा होती है तथा जिसमें कर्म संज्ञा हो उसमें द्वितीया विभक्ति हो जाती है।

अर्थात् शी (शीङ्), स्था और आस् धातु के पहले यदि अधि उपसर्ग जुड़ा हो तो जिस स्थान पर सोने, ठहरने तथा बैठने का कार्य किया जा रहा है, उस आधार की कर्म संज्ञा कर द्वितीया विभक्ति की जाती है।

विष्णुः वैकुण्ठे शेते ।

प्रथमा सप्तमी

विष्णुः वैकुण्ठं अधिशेते ।

नृपः सिंहासने तिष्ठति

नृपः सिंहासनं अधितिष्ठति

जैसे : हरिः वैकुण्ठं अधिशेते। (अधि+शीङ्) (हरि बैकुंठ में सोता है ।)

यहाँ शी. (शीङ्) धातु से पहले अधि उपसर्ग होने के कारण जिस स्थान पर सोया जा रहा है, उसमें सप्तमी विभक्ति ना होकर द्वितीया विभक्ति होती है।

आधार - कर्म

उसी प्रकार अन्य उदाहरण:

- हरिः वैकुण्ठं अधितिष्ठति (अधि + स्था)।

(हरि बैकुण्ठ में ठहरता है |)

- हरिः वैकुण्ठं अध्यास्ते । (अधि + आस्)

(हरी वैकुण्ठ में बैठता है |)

- नृपः सिंहासनम् अध्यास्ते ।

(राजा सिंहासन पर बैठता है)

- रामः आसन्दम् अधितिष्ठति ।

(राम कुर्सी पर बैठता है।)

अधिशेते

अध्यास्ते

अधितिष्ठति

विशेष

यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि यदि शीङ, स्था और आस् धातु | आगे " अधि" उपसर्ग ना हो, तो वहाँ आधार की कर्म संज्ञा नहीं होती है।। अपितु वहाँ अधिकरण संज्ञा होकर सप्तमी विभक्ति हो जाती है।

जैसे:

- हरिः वैकुण्ठे शेते । (हरि वैकुण्ठ में सोता है।)
- हरिः वैकुण्ठे तिष्ठति। (हरी वैकुण्ठ में बैठता है।)
- हरिः वैकुण्ठे आस्ते। (हरि वैकुण्ठ में ठहरता है।)

सूत्रः "अभिनिविशश्च"

वृत्तिः अभिनिपूर्वस्य विशतेराधारो यः, तत् कारकम् कर्मसंज्ञं भवति ।

सूत्रार्थः यदि विश् धातु (प्रवेश अर्थ में) के पहले अभि और नि दोनों उपसर्ग एक साथ हो तो विश् धातु के आधार की कर्म संज्ञा होती है।

जैसे :

- **गुरुः सन्मार्गम् अभिनिविशते ।**
  (गुरु अच्छे मार्ग पर प्रवेश करता है ।)

यहाँ विश् धातु के पहले अभि और नि दोनों उपसर्ग एक साथ हैं, अतः जहाँ प्रवेश किया जा रहा है उस मार्ग में द्वितीया विभक्ति होती है।

- दुष्टः कुमार्गम् अभिनिविशते ।
  (दुष्ट कुमार्ग पर प्रवेश करता है |)

विशेष

यदि विश् धातु के आगे अभि और नि उपसर्ग नहीं हो, तो आधार की कर्म संज्ञा नहीं होती है। यहाँ सप्तमी विभक्ति हो जाती है।

जैसे: छात्रः सन्मार्गे विशति ।
(छात्र अच्छे मार्ग पर प्रवेश करता है।)

सूत्रः "उपान्वध्याङ्वसः"

वृत्तिः उप अनु अधि आ इत्येवं पूर्वस्य वसतेराधारो यः, तत् कारकं कर्मसंज्ञं भवति।

सूत्रार्थः उप, अनु, अधि, और आङ् (आ) उपसर्ग पूर्व में रहने पर वस् धातु (रहने के अर्थ में) के आधार की कर्म संज्ञा होती हैं।

जैसेः

हरिः वैकुण्ठम् उपवसति। (उप + वस् धातु)

(हरि वैकुण्ठ में रहता है |)

यहाँ वस् धातु के पहले 'उप' उपसर्ग होने के कारण जहाँ निवास किया जा रहा है, उस स्थान (वैकुण्ठ) में सप्तमी विभक्ति न होकर द्वितीया विभक्ति होती है।

हरिः वैकुण्ठे वसति ।

हरिः वैकुण्ठं उपवसति / अनुवसति / अधिवसति / आवसति

अन्य उदाहरण:

- हरिः वैकुण्ठम् अनुवसति । (अनु + वस् धातु)

(हरि वैकुण्ठ में रहता है |)

- हरिः वैकुण्ठम् अधिवसति । (अधि + वस् धातु)

(हरि वैकुण्ठ में रहता है |)

- हरिः वैकुण्ठम् आवसति । (आ + वस् धातु)

(हरि वैकुण्ठ में रहता है |)

- नृपः दुर्गम् उपवसति। (राजा दुर्ग में रहता है |)
- रामः वनम् उपवसति । (राम वन में रहता है |)
- सेनाः रणक्षेत्रम् उपवसति । (सेना रणक्षेत्र में रहती है।)

विशेष

परन्तु यदि वस् धातु के आगे उपर्युक्त चारों उपसर्ग ना हो, तो उस स्थान की कर्म संज्ञा ना हो कर अधिकरण संज्ञा करके सप्तमी विभक्ति होती हैं।

जैसे: रामः वने निवसति । (राम वन में रहता है।)

उभसर्वतसोः कार्या धिगुपर्यादिषु त्रिषु ।

द्वितीयाऽऽम्रेडितान्तेषु ततोऽन्यत्रापि दृश्यते ॥ कारिका

अर्थः उभयतः (दोनों ओर), सर्वतः (सब ओर), धिक् (धिक्कार), उपर्युपरि [उपरि + उपरि उपर्युपरि (ऊपर ही ऊपर)], 'अध्यधि [अधि + अधि =अध्यधि (बीचों-बीच)], तथा अधोऽध [अधः + अधः अधोऽध (नीचे ही नीचे)] इन सभी पदों के योग में द्वितीया विभक्ति होती है।

जैसे:

- कृष्णम् उभयतः गोपाः । (कृष्ण के दोनों ओर ग्वाले हैं।)
- कृष्णम् सर्वतः गोपाः । (कृष्ण के सभी ओर ग्वाले हैं।)
- धिक् दुर्जनम्। (दुर्जन को धिक्कार है ।)
- धिक् नास्तिकम्। (नास्तिक को धिक्कार है ।)
- धिक् कृष्णाभक्तम्। (कृष्ण के अभक्त को धिक्कार है।)
- लोकम् उपर्युपरि हरिः। (संसार के ऊपर हरि है।)
- लोकम् अध्यधि हरिः । (संसार के बीचों-बीच हरि है |)
- लोकम् अधोऽधः हरिः । (संसार के नीचे हरि है |)
- भूमिम् अधोऽधः जलम्। (भूमि के ठीक नीचे जल है ।)

इन सभी उदाहरणों में उभयतः, सर्वतः धिक्, उपर्युपरि, अध्यधि, तथा अधोऽध का प्रयोग हुआ है, अतः जिसके प्रति इनका प्रयोग हुआ हैं, उसमें द्वितीया विभक्ति होती है

DSSSB TGT & PGT संस्कृत SCHOLAR BATCH

"अभितःपरितःसमयानिकषाहाप्रतियोगेऽपि " (वार्तिकम्)

अर्थः अभितः (दोनों ओर), परितः (चारों ओर), समया (समीप), निकषा (समीप), हा (शोकार्थक), तथा प्रति के योग में भी द्वितीया विभक्ति होती है।

जैसेः

- शिक्षकं परितः छात्राः सन्ति । (शिक्षक के चारों ओर छात्र हैं ।)
- कृष्णम् अभितः गावः सन्ति । (कृष्ण के दोनों ओर गायें हैं ।)
- ग्रामं समया विद्यालयः अस्ति । (गाँव के समीप विद्यालय है।)
- विद्यालयं निकषा नलकूपः अस्ति। (विद्यालय के निकट नलकूप है।)
- हा कृष्णाभक्तम् । (कृष्ण के अभक्त के लिए दुःख / खेद है।)
- छात्रः विद्यालयं प्रति गच्छति । (छात्र विद्यालय की ओर जाता है।)

इन सभी उदाहरणों में अभितः, परितः, समया, निकषा, हा तथा प्रति का प्रयोग हुआ है, अतः जिसके प्रति इनका योग हुआ हैं, उसमें द्वितीया विभक्ति होती है।

सूत्रः " अन्तराऽन्तरेण युक्ते द्वितीया"

वृत्तिः अन्तरान्तरेण शब्दौ निपातौ साहचर्याद् गृह्येते । आभ्यां योगे द्वितीया विभक्तिर्भवति ।

सूत्रार्थः अन्तरा (मध्य में) और अंन्तरेण (बिना) पदों के योग में भी द्वितीया विभक्ति हो जाती है।

जैसेः

गङ्गां यमुनां च अन्तरा प्रयागः अस्ति । (गंगा और यमुना के बीच में प्रयाग है।)

यहाँ गङ्गा और यमुना की मध्यस्ता बतलाने के लिए अन्तरा का प्रयोग किया गया है, अतः गङ्गा और यमुना दोनों में द्वितीया विभक्ति होती है।

अन्य उदाहरण:

- त्वां मां च अन्तरा हरिः अस्ति । (तुम्हारे और मेरे बीच में हरि है ।)
- हरिम् अन्तरेण सुखं नास्ति । (हरि के बिना सुख नहीं है ।)
- ज्ञानम् अन्तरेण सद्गतिः नास्ति। (ज्ञान के बिना सद्गति नहीं है ।)
- ज्ञानम् अन्तरेण न मुक्तिः । (ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं है ।)

सूत्र "कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे।"

कालवाचक और मार्गवाचक शब्दों के अत्यन्त संयोग को बतलाने वाले शब्दों में द्वितीया विभक्ति होती है;

यथा –

(अ) सुरेशः अत्र पञ्चदिनानि पठति ।

(सुरेश यहाँ लगातार पाँच दिन से पढ़ रहा है)

(ब) नदी क्रोशं कुटिला अस्ति ।

(नदी कोस भर तक लगातार टेढ़ी है।)